International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में स्वामी दयानन्द की भूमिका

Dr. Sanjeet
Lecturer in History
G.S.S.S. Baniyani , District- Rohtak (HR.)
E-mail: sanjeetkanheli1980@gmail.com

शोध–आलेख सार : वास्तव में भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में स्वामी दयानन्द का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। वे भारतीय राष्ट्रवाद और पुर्नजागरण के ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने विशुद्ध रूप से भारतीय राष्ट्रवाद का प्रतिपादन करके उसे वैदिक भावना से ओत–प्रोत किया है। यही कारण है कि उनके राष्ट्रवाद को सबसे अधिक मौलिक हिन्दू राष्ट्रवाद कहा जाता है। चूंकि स्वामी जी प्रत्यक्ष रूप से भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन से तो नहीं जुड़े थे लेकिन उनके विचारों ने निराश भारतीयों में राष्ट्रीयता की चेतना पैदा करने में अहम् भूमिका अदा की थी। उन्होंने स्वराज्य शब्द का सबसे पहले प्रयोग करके भावी पीढ़ी को नई सोच प्रदान की और यही शब्द आगे चलकर राष्ट्रवादियों के लिए मूलमन्त्र बन गया। उन्होंने वेदों की ओर लौटने का आहवान करके भारतीयों में नवचेतना, स्वाभिमान, आत्मविश्वास तथा आत्मगौरव की भावनाएं पैदा की। इससे भारतीय राष्ट्रवाद के इतिहास में नये युग की शुरूआत हुई। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में स्वामी दयानन्द की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

मूलशब्द– राष्ट्रवाद, स्वदेशी, स्वराज्य, आत्मविश्वास, देश–प्रेम, नवजागरण।

भूमिका– स्वामी दयानन्द ने भारतीयो के हृदयों में स्व–धर्म और स्वदेश के प्रति स्वाभिमान पैदा करके राष्ट्रीयता के बीज बो दिए। उन्होंने 19वीं सदी में पथभ्रष्ट भारतीय समाज को पुनः जागृत करने का कार्य किया। उन्होंने महसूस किया कि लम्बे समय तक विदेशी शासन के कारण प्राचीन भारतीय गौरवमयी संस्कृति व परम्पराएं लुप्त प्रायः हो चुकी थी और भारतीय लोगों का नैतिक व अध्यात्मिक पतन भी हो चुका था। ऐसे

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

वातावरण में स्वामी दयानन्द ने वेदों को आधार बनाकर भारतीय जनता से आह्वान किया कि वे अपने गौरवशाली अतीत के आधार पर राष्ट्रीय भावनाओं को मजबूत बनाने के लिए आगे बढ़ें। उन्होंने विकृत हिन्दू धर्म और समाज में ऐसी क्रान्ति की कि उन्हें भारत का 'मार्टिन लूथर' कहा जाता है। इस सन्दर्भ में भवानी लाल भारतीय ने लिखा है कि स्वामी दयानन्द ने राष्ट्रीय एकता की प्रतिष्ठता स्थापित करने के साथ–साथ राष्ट्रवाद का भी पुनरूत्थान करने में अहम् भूमिका अदा की। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद के पुनरूत्थान का दिशा निर्देश उस समय किया था जब भारत में सार्वजनिक जीवन में इसकी कोई चर्चा नहीं थी।[1]

चूंकि स्वामी दयानन्द के समय में भारत राजनैतिक दृष्टि से ब्रिटिश साम्राज्यवादी कुशासन की बेडियों में जकड़ा हुआ था। ऐसे शासन के तहत भारतीयों पर तरह–तरह के अत्याचार होते थे और आवाज उठाने पर ब्रिटिश सरकार द्वारा दमन चक्र चलाया जाता था। इस स्थिति में भारतीयों के मन में राष्ट्रप्रेम तथा स्वाभिमान की भावना लुप्त हो चुकी थी। कई बार भारतीयों ने विरोध आन्दोलन चलाये परन्तु असफल रहे। आर्थिक क्षेत्र में भी अंग्रेजों ने शोषणकारी नीतियां लागू कर रखी थी। तत्कालीन हिन्दू समाज की दशा भी अत्याधिक शोचनीय थी तथा भारतीय समाज जाति व वर्गों में बंटा हुआ था। इसमें अशिक्षा, सती–प्रथा, पर्दा–प्रथा, बाल–विवाह, बहुदेववाद, कन्यावध, पशु बलि आदि बुराईयां प्रचलित थी। वैदिक धर्म का पुराना स्वरूप लुप्त हो चुका था और इस विकृत अवस्था में ब्रिटिश मिशनरियों की बाढ़ सी आ गई थी। ये लोग हिन्दू धर्म, दर्शन, और संस्कृति का खुला उपहास करते थे।[2] इस तरह भारत का सामाजिक, धार्मिक और

[1] भवानी लाल भारतीय, स्वामी दयानन्द सरस्वतीः व्यक्तित्व, विचार और मूल्यांकन, पृ0 130.

[2] लाल साहब सिंह, स्वामी दयानन्द का राजनीतिक दर्शन, पृ0 50.

राजनैतिक जीवन निष्प्राण हो चुका था। लुप्त हुई देश प्रेम की भावना के कारण संकीर्ण स्वार्थ प्रवृतियों ने जन्म ले लिया था।

दूसरे शब्दों में अंग्रेजों का अखण्ड शासन व प्रभाव भारत पर पूर्ण रूप से कायम हो चुका था। यद्यपि इस दौरान अनेक समाज सुधार आन्दोलन भी चलाए गए। इन आन्दोलनों में स्वामी दयानन्द और उनकी संस्था आर्य समाज की विशेष भूमिका रही, क्योंकि स्वामी जी का दर्शन विशुद्ध रूप से भारतीय राष्ट्रवाद पर आधारित था। विश्वनाथ प्रसाद वर्मा ने लिखा है कि जिन दिनों भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद के पास में जकड़ा हुआ था, उस समय स्वामी दयानन्द ने भारत की राजनीतिक स्वतन्त्रता की नींव तैयार की, हिन्दी में वेद भाष्य लिखे, दलितों तथा स्त्रियों के उद्धार के लिए धर्म युद्ध चलाया तथा शिक्षा पर अत्याधिक बल दिया। सामाजिक न्याय के समर्थक के रूप में उन्होंने आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गों की पुनः स्थापना का उपदेश दिया। उन्होंने स्वराज्य का नारा देकर और आर्य समाज की स्थापना करके भारतीय जनता में देशभक्ति की भावना का संदेश दिया।[3]

स्वामी दयानन्द ने भारतीय जनमानस को ऐसे समय में मार्गदर्शन दिया जब ईसाई सभ्यता देश की पुरानी संस्कृति पर प्रहार कर रही थी और ईसाई धर्म प्रचारक अपना जाल फैला रहे थे। ऐसे समय में स्वामी जी हिन्दू पुनरूत्थानवाद के प्रबल समर्थक के रूप में प्रकट हुए। रानाडे, गांधी और विवेकानन्द की तरह उन्होंने अनुभव किया कि धर्म ने ही भारत की महान विपत्तियों से रक्षा की है। इसलिए उन्होंने वैदिक परम्परा को पुर्नजीवित करने का समर्थन किया। उन्होंने भारतीयों के खोये हुए गौरव, आत्मसम्मान और आत्मविश्वास को सशक्त बौद्धिक जागरण के माध्यम से वापिस लाने का प्रयास किया। स्वामी दयानन्द आधुनिक भारत के निर्माता थे। उन्होंने सामाजिक व धार्मिक

[3] विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, पृ0 33.

कुरीतियों के निवारण के लिए जोरदार आन्दोलन चलाए और भारतीय सभ्यता व संस्कृति का गौरवमयी गुणगान किया। उनके राष्ट्रवादी विचारों के कारण तत्कालीन भारतीय समाज में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए।

स्वामी दयानन्द पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने बिना किसी मदद के राष्ट्रवादी भावना का संचार किया और भारतीय संस्कृति पर हो रहे विदेशी प्रहारों के खिलाफ पुरजोर आवाज उठाई। उनका मानना था कि वैदिक धर्म की प्राण प्रतिष्ठा किये बिना भारतीय लोगों में राष्ट्रीयता की भावना पैदा नहीं हो सकती। उन्होंने ईसाईयत के खतरे को अनुभव करते हुए शुद्धि आन्दोलन चलाया ताकि ईसाई बने हिन्दुओं को वापिस हिन्दू धर्म में दीक्षित किया जा सके।[4] स्वामी दयानन्द का राष्ट्रवाद विशुद्ध रूप से धार्मिक दृष्टिकोण लिए हुए था। वे चाहते थे कि सभी भारतीय वैदिक धर्म की पताका के नीचे आ जाऐं। इसलिए उन्होंने शुद्धि आन्दोलन के माध्यम से धर्मांतरण के कार्य को बन्द करवाया तथा उन सभी धर्मों की पोल खोलकर रख दी जो धर्म के नाम पर लोगों को ठगने का कार्य करते थे। उन्होंने वैदिक धर्म के दरवाजे सभी जाति व धर्म के लोगों के लिए खोले। वास्तव में उनका धार्मिक दृष्टिकोण विस्तृत प्रकृति का था। उन्होंने धर्म का अर्थ बताते हुए कहा कि धर्म केवल पूजा पद्धति ही नहीं है बल्कि यह ईश्वर के प्रति निष्ठा रखते हुए उदार और शाश्वत मानवीय मूल्यों को धारण करने का नाम है। इस कार्य के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की और सुधारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए सच्चे राष्ट्रवादी होने का प्रमाण प्रस्तुत किया।

उन्होंने हिन्दू धर्म में फैली हुई बुराईयों जैसे – वर्ण व्यवस्था, जाति–भेद, छुआछात, साधु ढोंग, ब्राह्मणवाद, अंधविश्वास, अशिक्षा आदि पर कठोर प्रहार किया। वैदिक शिक्षाओं के प्रचार व प्रसार के द्वारा उन्होंने आधुनिक राष्ट्रवाद को प्रतिष्ठित करने का जो स्वप्न

[4] विद्यालंकार सत्यकेतु, आर्य समाज का इतिहास, पृ0 181.

संजोया था वह आगे चलकर पूरा हुआ। स्वयं स्वामी दयानन्द ने स्वीकार किया है कि किसी मत मतान्तर चलाने की उनकी कोई इच्छा नहीं है। उनका उद्देश्य केवल सत्य को मानना और मनवाना तथा असत्य को अस्वीकार करना है।

स्वामी दयानन्द ने खोई हुई भारतीय अस्मिता का शंखनाद करके भारतीय राष्ट्रवाद को वैचारिक आधार प्रदान किया तथा वेदों की तरफ लौटने का आह्वान करके भारतीयों में भारतीयता की भावना का संचार किया। उनके प्रयासों से भारतीय समाज में जागृति आई और कई सामाजिक बुराईयों का अंत हुआ। उन्होंने वैदिक ज्ञान और वैदिक मूल्यों की सर्वोच्चता का उद्घोष करके भारतीय संस्कृति की महान विरासत के प्रति अभिमान का भाव व्यक्त किया। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है–''भारत की पराधीनता का मुख्य कारण यह रहा है कि भारतीय जनता ने वेदों में प्रतिपादित जीवन मूल्यों और आचरण के नियमों की उपेक्षा करनी आरम्भ कर दी। उनके अनुसार वेदोक्त जीवन पद्धति से हटकर भारतीय लोग चारित्रिक पतन के मार्ग पर चल पड़े और विदेशियों ने भारत पर आधिपत्य स्थापित कर लिया।[5] इससे स्पष्ट होता है कि स्वामी दयानन्द भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना जगाने के लिए कितने चिन्तित थे। उन्होंने बार–बार अपने उपदेशों में स्वदेश प्रेम की बात करके गौरवशाली अतीत से सीखने की सलाह दी। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि आपसी फूट, अज्ञान, चारित्रिक पतन और सामाजिक कुरीतियों के कारण ही भारत की स्वतंत्रता नष्ट हुई। उन्होंने भारतीय इतिहास के उन चरित्रों की आलोचना की जिनके कारण भारतीय समाज में वैमनस्य की भावना पैदा हुई और स्वार्थवादी चिन्तन का विकास हुआ। स्वामी दयानन्द वास्तव में विवेकहीन परम्पराओं और अन्धविश्वासों को समाप्त करके सच्चे राष्ट्रवाद की नींव रखना चाहते थे।

[5] महर्षि दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थ प्रकाश, पृ0 167.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

चूंकि स्वामी दयानन्द ने भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय रूप से तो कोई भाग नहीं लिया था, परन्तु वे भारत की स्वतंत्रता के प्रति चिन्तनशील थे। उन्हें इस बात का बड़ा दुःख था कि भारत पर विदेशी शासन है। अतः उन्होंने भारत के लिए विदेशी शासन से मुक्ति पाने के लिए भारतीयों को ऐसी आचरण पद्धति अपनाने का परामर्श दिया जो वैदिक चिन्तन पर आधारित थी। उनका मानना था कि विदेशी शासन के कारण भारतीय जनता को कष्ट सहने पड़े और राजनैतिक आधिपत्य के साथ–साथ सांस्कृतिक दासता में भी जकड़े रहना पड़ा। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि विदेशी शासन भारत के लिए कभी भी वरदान नहीं बन सकता। जब तक भारतीय इस कलंक को नहीं धोयेगें तो उन्हें भारतीय होने का गौरव कभी प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए उन्होंने सभी भारतीयों से आग्रह किया कि गुलामी की जंजीर को तोड़कर स्वदेश प्रेम की भावना उजागर करे ताकि भारतीय राष्ट्रवाद को नया रूप मिल सके।

स्वामी दयानन्द को इस बात का बड़ा दुःख था कि भारतीय समाज में अनेक विघटनकारी प्रवृतियां पैदा हो चुकी थी। सामाजिक जीवन में महिलाओं और शूद्रों की स्थिति कष्टकारी थी। इसलिए उन्होंने सामाजिक समानता पर बल दिया और स्त्री शिक्षा के अधिकार की वकालत की। उनका मत था कि स्त्रियों को शिक्षा से वंचित करके भारतीय समाज की स्त्रियों का ही अहित नहीं किया है बल्कि समाज के एक महत्वपूर्ण वर्ग की क्षमताओं में शिक्षा के माध्यम से होने वाली बुद्धि को रोककर समाज का गंभीर अहित भी किया है।[6] वास्तव में स्वामी जी सामाजिक एकता की स्थापना द्वारा राष्ट्रवाद की नींव मजबूत करना चाहते थे।

स्वामी जी ने अनुभव किया कि पराधीन व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख नहीं मिल सकता। यह उनके असीम राष्ट्रप्रेम की प्रेरणा का ही परिणाम था कि उन्होंने अपने इस

[6] वीरेन्द्र शर्मा, आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारधाराऐं, पृ0 124.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

दायित्व को बहुत कुशलता के साथ पूरा किया तथा भारतीयों के हृदयों में स्वधर्म और स्वदेश के प्रति स्वाभिमान की भावना उत्पन्न की। उन्होंने प्रत्येक भारतीय के मन में यह भावना पैदा करने का प्रयास किया कि हम सब इस देश की मिट्टी में पलकर बड़े हुए हैं। अतः तन–मन–धन से इस देश की सेवा करना हमारा परम कर्त्तव्य है। हमारी मानसिक पराधीनता ही हमारे सभी दुःखों का कारण है। अतः हम सब भारतीयों को एक सूत्र में बंधकर आजादी के प्रयास करने चाहिए।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

सारांश– इस तरह स्वामी दयानन्द ने मार्टिन लूथर की तरह हिन्दू धर्म में सुधार के लिए कार्य किया और भारतीय राष्ट्रवाद की नींव मजबूत की। उनके राष्ट्रवादी विचारों का विश्लेषण करने के बाद इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि वे एक पक्के राष्ट्रवादी थे और उनका राष्ट्रवाद विशुद्ध रूप से भारतीयता की भावना लिये हुए था। उन्होंने अपने राष्ट्रवाद को वैदिक परम्पराओं पर आधारित किया और हिन्दू धर्म के विकृत रूप की आलोचना की। उन्होंने आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की परिकल्पना करके भारतीय राष्ट्रवाद को नया रूप दिया तथा सर्वप्रथम स्वधर्म, स्वशासन, और स्वदेशी पर बल देकर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की नींव रखने का कार्य किया। उन्होंने स्वराज्य शब्द का प्रयोग सबसे पहले किया और यही शब्द बाद में राष्ट्रीय आन्दोलन का मुख्य सिद्धान्त बन गया।

सन्दर्भ सूची–

- विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, **आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन**, अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, 1975.
- क्षितीश वेदालंकार, **दयानन्द दिव्य दर्शन,** सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, 1976.
- विजेन्द्र पॉल सिंह, **भारतीय राष्ट्रवाद व आर्यसमाज आन्दोलन,** विभु प्रकाशन, साहिबाबाद, 1977.
- उमाकान्त उपाध्याय, **आर्य समाज कलकता का इतिहास,** विद्यासरनी, कलकता, 1985.
- विद्यालंकार सत्यकेतु, **आर्य समाज का इतिहास**, आर्य स्वाध्याय केन्द्र, दिल्ली, 1986.
- लाल साहब सिंह, **स्वामी दयानन्द का राजनीतिक दर्शन**, आर्य समाज, कलकता, 1990.

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

- वीरेन्द्र शर्मा, **आधुनिक भारतीय राजनीतिक विचारधाराऐं**, श्री पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1994.
- रविन्द्र कुमार, **आधुनिक भारत का सामाजिक इतिहास,** ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 1997.
- बाबू राम शास्त्री, **महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय, धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं की प्रासंगिकता,** वैदिक शोधपीठ, अजमेर, 1998.
- भवानी लाल भारतीय, **स्वामी दयानन्द सरस्वतीः व्यक्तित्व, विचार और मूल्यांकन**, दयानन्द अध्ययन संस्थान, जोधपुर, 2000.
- महर्षि दयानन्द सरस्वती, **सत्यार्थ प्रकाश**, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, विक्रम संवत् 2003.